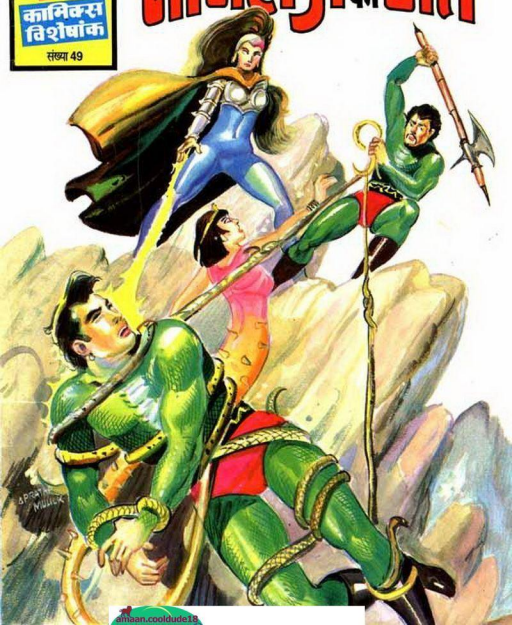


राज

**कामिक्स
विशेषांक**

संख्या 49

नागराज का अंत



देखने वाले थाम लें, अपने-अपने धड़कते दिल-

और जो नहीं देख सकते, बेबंद कर लें अपनी-अपनी भयभीत आंखें- क्योंकि अब होने वाला है...

नागाराज का अंत

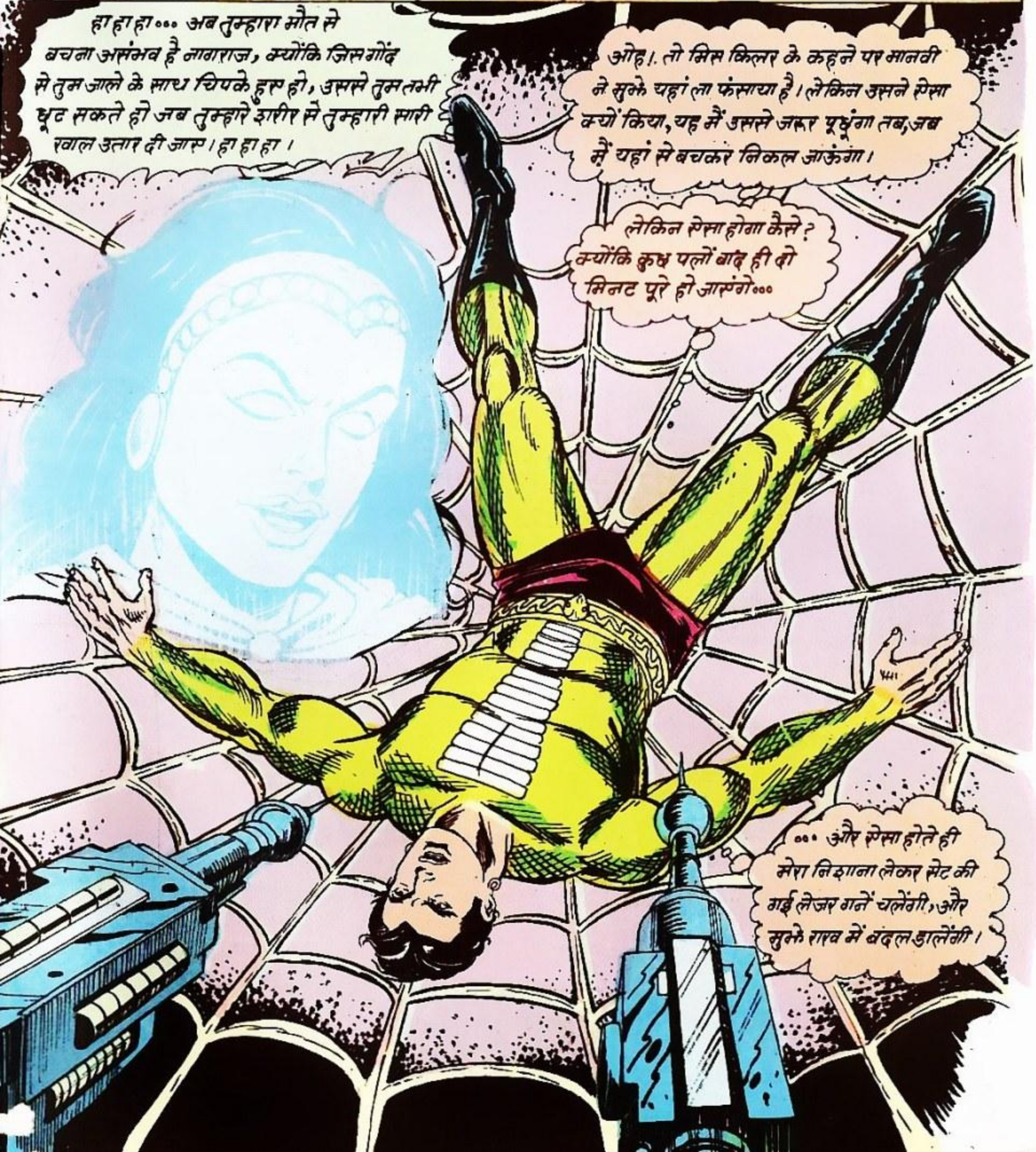
लेखक: अनुपम सिन्हा, हनीफ अजहर • चित्र: अनुपम सिन्हा • इंकिंग: विनोद कुमार • सुलेख स्वयं • सुनील पाण्डेय • संपादक: मन्वीष गुप्ता

हा हा हा... अब तुम्हारा मौत से बचना असंभव है नागाराज, क्योंकि जिस गोंद से तुम जाले के साथ चिपके हुए हो, उससे तुम तभी धूट सकते हो जब तुम्हारे शरीर से तुम्हारी सारी रवाल उतार दी जाए। हा हा हा।

ओह! तो मिस किलर के कहने पर मानवी ने मुझे यहां ला फंसाया है। लेकिन उसने ऐसा क्यों किया, यह मैं उससे जरूर पूछूंगा तब, जब मैं यहां से बचकर निकल जाऊंगा।

लेकिन ऐसा होगा कैसे? क्योंकि कुछ पलों बाद ही दो मिनट पूरे हो जाएंगे...

... और ऐसा होते ही मेरा निशाना लेकर सेट की गईं लेजर गन चलेगी, और मुझे राख में बदल डालेगी।



अचानक- बिजली सी कौंध गई
नागराज के सस्तिष्क में-

खाल! मिस किरण के
शब्दों में मेरे बचने का तरीका
धुपा हुआ है, मैं बच सकता हूँ
अगर मैं गोंद से चिपकी अपनी
खाल उतारने में सफल हो जाऊँ
तो...

... और ऐसा कर
लेना मेरे लिए मुश्किल
नहीं है...

... क्योंकि मैं सर्पों की
विशेषताओं वाला मानव हूँ।
सर्पों के सभी गुणों के साथ-
साथ मुझमें यह भी गुण है...

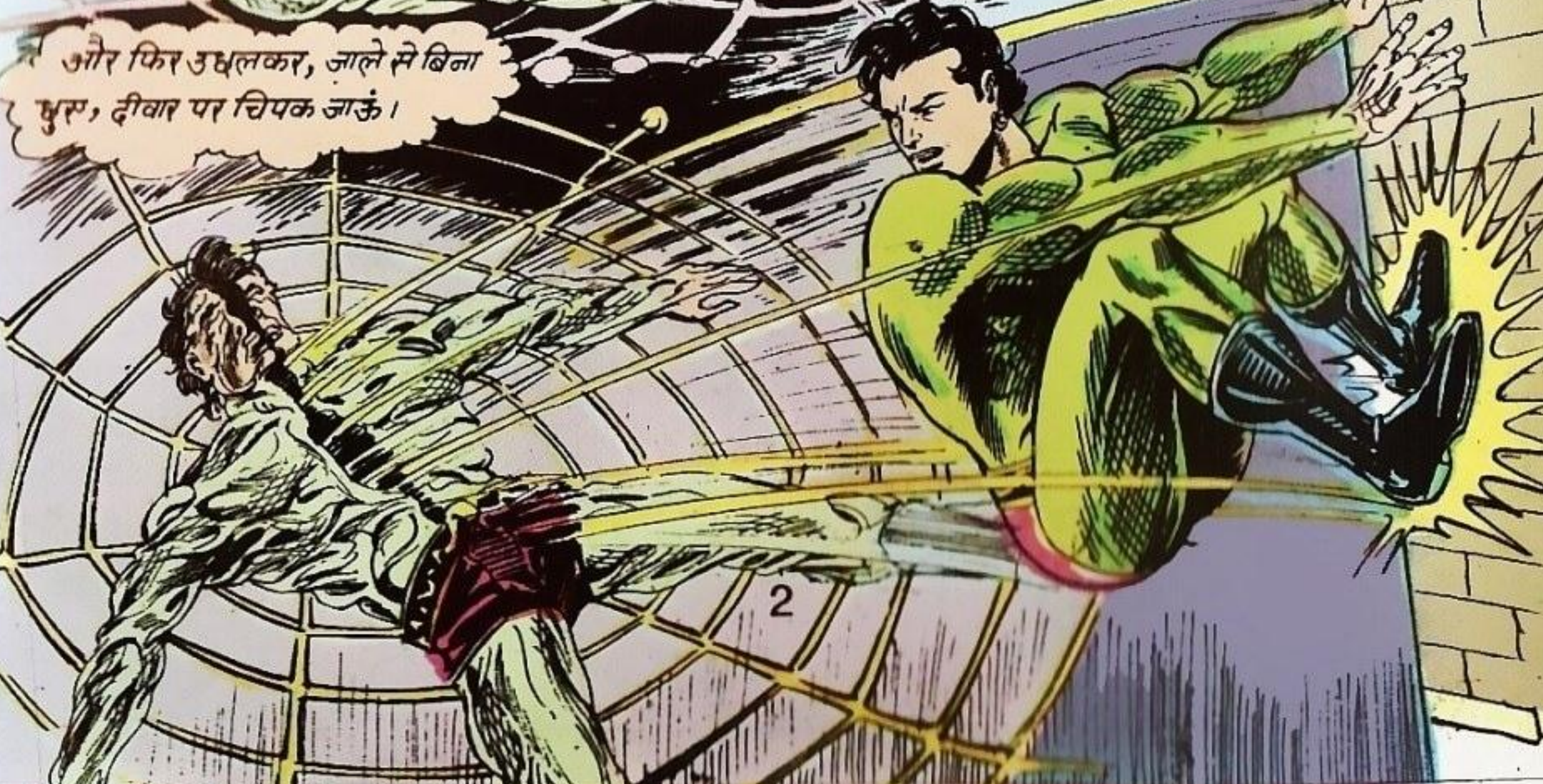


... कि मैं
अपनी केंचुली बदल
सकता हूँ।
अब सिर्फ
इतना ही समय है...



... कि मैं अपनी बेल्ट के
अंदर सूक्ष्म रूप में रखा
ओवरकोट,जूते, बेल्ट आदि
निकालकर पोशाक बदल लूँ।

और फिर उधलकर, जाले से बिना
धुर, दीवार पर चिपक जाऊँ।



अभी एक पल भी नहीं गुजरा था कि—

फिर नागराज दीवार पर रेंगाता हुआ उस मौत के मुंह से बाहर निकला—



उफ! उफ! कैंचुली बदलने का
उपाय अगर एक पल बाद सूझता तो
मैं राव के एक बेर के रूप में पड़ा होता।



तभी— बहुत खूब नागराज, तुम्हारी
अनेसी रूबी ने तुम्हें एक निश्चित
मौत से बचा लिया। लेकिन ये मत समझना
कि अब काल का साथ तुम्हारे ऊपर से हट
गया, तुम इस मंदिर से जिंदा बचकर नहीं
निकल सकते, तुम्हें
मरना होगा...

... हर हाल में मरना
होगा नागराज!
हा हा हा!

... लेकिन मौत के डर से मुझे यहीं
हारकर नहीं बैठ जाना। अंजाम चाहे जो
भी हो मुझे यहां से बाहर निकलने का
प्रयास तो करना ही होगा।



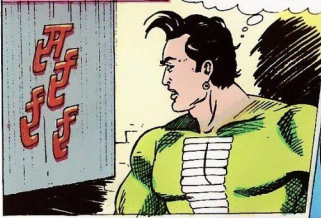
मिस किलर अपने हेडक्वार्टर में बैठी
ना केवल मेरी गतिविधियों पर नज़र रखे
हूँ है बल्कि साध ही हाथ के हाथ ये
इंतज़ाम भी करती जा रही है कि मैं यहां
से जिंदा बाहर ना निकल सकूँ...

एक तरफ बड़ चला नागराज—

कुछ ही कदम आगे बढ़ने के बाद
दुग्री तरह चौंका—

ओह! सामने से रास्ता स्टील
की मोटी छादर से बंद हो गया...

... पीछे वाला
भी!



मैं बचने नुमा कमरे में बंद हो
चुका हूँ। लेकिन मुझे यहाँ बंद
क्यों किया गया है?

नागराज को जब अपने
सवालियों का जवाब मिला तो उसके
सारे जिस्म में एक सर्व सिहरन दौड़
गई—

ओह! दोनों तरफ की
दीवारों से नदतर निकल
रहे हैं, जो कुछ ही पलों में
आपस में मिल जाएंगे...

... और अगर मैं यहाँ खड़ा
रहा तो ये नदतर मेरा
की ना बनाकर रबर
बनेंगे।

लेकिन मैं इनसे बचूँ
कैसे? यहाँ तो कोई
दरवाजा है ना पिछुकी।

अब तो मुझे अपने
को बचने के लिए ऊपर
की तरफ बढ़ना होगा!

और ऐसा मैं करूँगा इस लोहे की
दीवार पर तर्प की शॉल्टर ऊपर
की तरफ रेंगकर। अहहह!

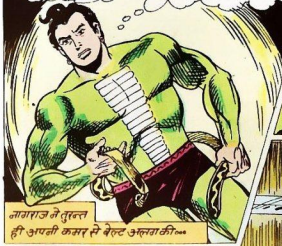


ओपफ! इस लोहे की दीवार में
ऊपर कोई ऐसी
करंट प्रवाहित काके निस किलर
जवाह भी नहीं है जहाँ
ने इस बात का पुरज्जा इंतजाम कर
मैं नावाहस्पसी का फेंदा
रखा है कि मैं दीवार पर रेंगकर
अटकाकर ऊपर की
ऊपर की तरफ जा बड़ सकूँ। तरफ भूल जाऊँ।



लेकिन ऊपर की तरफ बढ़ना तो होगा ही, और ये काम किलहाल सिर्फ नेजों पर चढ़कर ही हो सकता है...
... और नेजों पर चढ़ने से मेरे हाथों को कोई नुकसान ना पहुंचे इसके लिए मुझे अपनी बेल्ट की मदद लेनी होगी।

... और उसे दो टुकड़ों में बांटकर उन्हें अपने हाथों में लंपेटा—



नागराज ने तुरन्त ही अपनी कमर से बेल्ट अलग की...

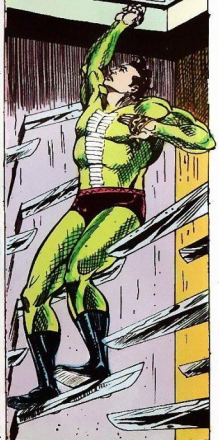


और उससे कहीं ज्यादा तेजी से एक व दूसरे की तरफ बढ़ रहे थे नेजे—

और फिर— तेजी से एक दूसरे की तरफ बढ़ते नेजे आपस में मिलें, मुझे उससे पहले ही ऊपर पहुंचना है!



मौत को मात देने के लिए तेजी से ऊपर की तरफ बढ़ रहा था नागराज—



लेकिन फिर भी नागराज मौत के हाथों से जिन्दगी छीन लेने के लिए जी जान से जुटा हुआ था—

नागाराज के प्रयास को देखती
मिस किलर ने रुक जोरदार
ठहाका लगाया—

हा हा हा ! और
तेज और तेज
नागाराज ...

संघर्ष-

झुक है मैं दुन
नेजों रूपी मौत को
मौत देकर यहां पहुंचने में
सफल हो गया और झुक है
इस बात का भी, यहां धूल की
दीवार पर करंट नहीं दौड़ रहा और
ये सा इसलिये हुआ कि मिस
किलर को नेजों से बचकर मेरे
यहां पहुंचने की कतई उम्मीद
ना थी।



अब इस रोड़ानदान से बाहर निकलकर
मुझे उसकी हर उम्मीदों पर पानी फेरना
है। उंह!

रोड़ानदान उखाड़कर ...

कड़क

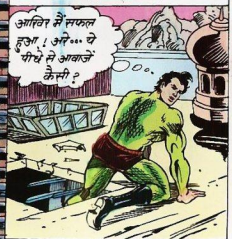


... देखें, जिन्दगी
और मौत के इस खेल
में द जीतता है या मौत!
हाहाहा !

कुछ पलों बाद ही मिस किलर के हलक से
उबलते ठहाकों पर मालो 'ब्रेक' लगा गया—

... नागाराज मंदिर से बाहर निकला—

आखिर मैं सफल
हुआ ! अरे... ये
पीछे से आवाजें
कैसी ?



ये क्या ?
नागाराज बच
निकला !

फुर्ती से उछला नागराज और बचाली
उड़ते अथनी जान -

उफ़!

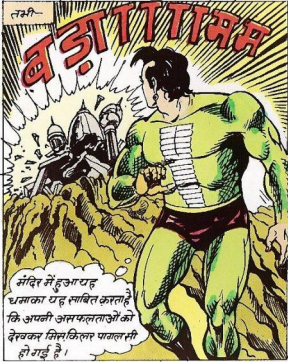
सर्द सर्द सर्द सर्द सर्द सर्द

घातक लेजर किरणों...

... जल्द ही खेतरे से बहुत दूर निकल
आया -

मौत से यह
रोमांचक लड़ाई मुझे
हमेंशा याद रहेगी!

नागराज की सहायता से किसी
कुड़ाल नट की भाँति स्वयं को लेजर
किरणों से बचाता नागराज...



बड़ा टाटा मम

मंदिर में हुआ यह धनाका यह साबित करता है कि अपनी असफलताओं को देखकर मिसकिलर पागल भी हो गई है।



बात ठीक वही थी—

बच निकला मेरे मौत के जाल से। बच निकला नागराज, लेकिन वह बचकर कहाँ जाएगा, मैं उसे धोड़ूगी नहीं।

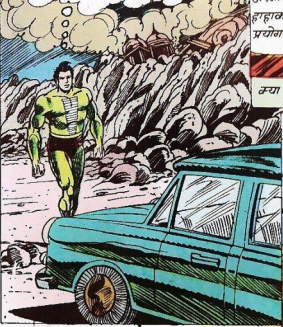
अब नागराज को खत्म करने के लिए मैं अपनी नई शक्ति का प्रयोग करूँगी...

धड़

नागराज—
यहाँ से सीधा मानवी के घर पहुँचकर उससे मिलकर ये पता करना होगा कि आखिर वह मुझे मिसकिलर के जाल में फँसाने के लिए क्यों ले गई? क्या मजबूरी थी उसकी?

... लेकिन उसके लिए नागराज को वहाँ पहुँचाना जरूरी है जहाँ मैं अपनी नई शक्ति का हाहाकारी वंगम प्रयोग कर सकूँ।

क्या थी मिसकिलर की नई शक्ति?



मानवी के घर पहुँचा नागराज—

सारा घर खाली है, ना तो मानवी नजर आ रही है और ना ही उसके परिवार का कोई सदस्य। कहां हैं सब?

मेरे पास!



... मैंने उन सबको कैद कर रखा है।

बिल्कुल ठीक कहा तुमने नागराज, जब मैं तुम्हें स्वतंत्र करने के लिए पावनों की भंगति सारे बंबर्ड में दूँगा ही थी तो तुम मुझे मानवी के घर में नजर आस थे।

ठीक है मानवी, मैं कल एक बार फिर तुमसे मिलूँगा।

नागराज किस प्रकार का मैं है!



मिंस किलर! ओह, समझ! चूंकि तुमने मानवी के परिवार को अपने पास कैद कर रखा है, इसलिए वह तुम्हारा साथ देने को तैयार हुई।

अपने सवालों का जवाब पाने के लिए मैंने तुरंत ही मानवी और उसके परिवार वालों को धर दबोचा—



... मानवी ने मुझे सब बताया—

ओह! ले नागराज किसी खास मन्दिर की खोज में है... रुठ, समझ ले नागराज की खोज पूरी हो गई!

मतलब!

मतलब यह कि नागराज जिस मंदिर को ढूँढता फिर रहा है वह स्वपहाला की पहाड़ियों में स्थित है। तुम कल उसे वहाँ लेकर पहुंचोगी।

लेकिन मेरी जानकारी में तो स्वपहाला के पहाड़ी क्षेत्र में कोई मंदिर...



... नहीं है लेकिन बना दिया जाएगा।

कुछ ना समझी। वह बेचारी—

... और समझती थी कैसे उसे ये कहां मालूम था कि मिस किलर को आरंभव काम की संभव करने में कितना मजा आता है—



हजारों मजदूर और अपने अलोगे आधुनिक साधनों की मदद से एक दिन में खण्डाला की पहाड़ियों में तुम्हारे सपनों का मंदिर खड़ा हो गया—

... क्योंकि मैं तुम्हें अपने सर्प सैनिकों से कैद करने जा रहा हूँ।



नागराज के हाथ से सेकड़ों सर्प निकलकर मिसकिलर की तरफ लहराए—

जिसमें मैंने तुम्हें मौत देने के हर साधन को स्वयं अपनी देख रेख में फिट कराया। लेकिन तुम्हारी किस्मत अच्छी थी कि तुम बच निकले।



मेरी किस्मत को दाव देने के साथ-साथ तू अपनी किस्मत को कोस मिसकिलर...००

लेकिन—

हा हा हा... नागराज जिसे तू कैद करने की कोशिश कर रहा है वह मैं नहीं, मेरा धी-डाइ मेनशन अक्स है...००

...अगर अपने अरमान पूरे करना और मानवीय उसके परिवार वालों को बचाना चाहता है तो...००



...सब आइलैंड पहुंच। हा हा हा!



मड आइलैंड! मैं जानता हूँ वहाँ मिस किलर ने मेरे लिए मौत का एक नया जाल बिधा रखा होगा। लेकिन मेरा वहाँ पहुंचना बहुत जरूरी है, क्योंकि मानवी और उसके परिवार वालों की जान खतरे में पड़ गई है। अगर उन्हें कुछ हो गया तो मैं अपने आपको कभी माफ नहीं कर पाऊंगा।



मड आइलैंड—

नागराज तुरन्त ही मड आइलैंड की तरफ रवाना हुआ—



उन दो घूरती आंखों से बेखबर जो आइसर्च-लिस उसे ही देख रही थीं—



कौन था यह?



नागराज आ पहुँचा था वहाँ—

चारों तरफ दलदल से घिरा वह छोटा सा टापू ही मड आइलैंड कहलाता है, जहाँ उस रोपवे हैगार से ही पहुँचा जा सकता है।

आ जा नागराज, आ जा। तेरी मौत तुझे यहाँ स्वीच ला रही है।



लोकेश्वरी की अंतिम मुस्कुराती मिस किलर की अंगुलियाँ सामने स्थित तैड़ा बोर्ड पर नृत्य कर उठीं—

इधर मड आइलैंड की जमीन पर पड़े नागराज के पाँव—

यहाँ मुझे ना सिर्फ मानवी को दूढ़ना है बल्कि मिस किलर को भी विषमता है और प्रयत्न करना है कि किसी तरह उसे सलारवों के पीछे पहुँचाने में सफल हो सकूँ।



आंखें आश्चर्य से फट पड़ीं उसकी सामने के उस दृश्य को देखकर जो आठवें अजूबे से भी बड़ा अजूबा था -

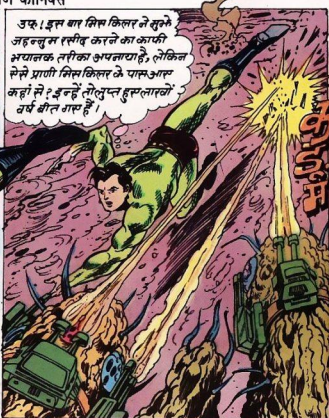
ये पीछे क्या है?

अपने पीछे आवाज सुनकर पलटा नागराज -

रट्टरट्टरट्टर

ओह! दलदल के नीचे से निकले ये भयानक जानवर ! जिनके शरीरों से घातक आधुनिक गोलें बंधी हुई हैं !

ड्यं मं



उफ़! इस बार मिस किलर ने मुझे जहन्नुम रसीद करने का काफी भयानक तरीका अपनाया है, लेकिन ऐसे प्राणी मिस किलर के पास आस कहां से? इन्होंने तो लुप्त हुए लारवों वर्ष बीत गए हैं!

... जिन में निकली किरणों का निदाना है मैं!

इनसे मुकाबला किए बगैर अब मेरा गुजारा नहीं, लेकिन खाली हाथ इनसे कैसे मुकाबला होगा इसके लिए मुझे कोई हथियार तो चाहिए ही, और इन प्राणियों के डारिर से बंधे हथियारों में अच्छा हथियार कौन सा हो सकता है!



लेकिन उसे हथियारों के लिए मुझे अपनी जान पर खेलना होगा!

... और कुछ पलों बाद ही उसकी पीठ पर जा पहुंचा—



नामजस्मी की सहायता में उधरलकर एक प्राणी के घंड़ों में पियट गया नामजस...

अध—



गन, हाथ में आते ही नागराज ने उसका इस्तेमाल करने में एक पल भी नहीं मंवाया—



दूसरा पल नागराज के लिए बेहद आउचर्यजनक था—

नागराज की मोर्चों को उस तेज प्रहार ने अंग किया—



आह!

धड़ाम से सिर के बल नीचे आ गिरा नागराज—

ओह! वह प्राणी तो तेजी से कीचड़ में बदलता जा रहा है, इसका मतलब मैं जिनहें लाखों वर्ष के जीवित प्राणी समझ रहा हूँ वह कीचड़ के बने हुए हैं, लेकिन मिस किरलर ने इनका निर्माण कैसे किया होगा?

अभी संभल भी नहीं पाया था कि उस पर एक और मुसीबत आ टूटी—

दलदल से निकले उस विचित्र से प्राणी की भुजाएं नागराज के शरीर से आ लिपटीं—

इन भुजाओं का मेरे शरीर पर कसाव धीरे-धीरे बढ़ रहा है। मुझे इनसे स्वयं को तुरंत आजाद करना होगा।



नागराज ने अपनी पूरी शक्ति लगा दी लेकिन—



आहह! मैं इस प्राणी की पकड़ से नहीं छूट पा रहा हूँ!

धीरे-धीरे उस प्राणी की भुजाओं के कसाव के बढ़ने के साथ ही—

नागराज का शरीर झिंझल पड़ता जा रहा था—

अंधेरे में डूबती नागराज की आँखों के सामने नाच रही थी दर्दनाक मौत—



और वह

मौत उसे हर हाल में मिलनी ही थी...

००० अगर वह चमत्कार ना हुआ होता —



जाने कहाँ से आकर आवा का वह तूफान उस विचित्र प्राणी से टकराया—

तो— ओह! ये भी कीचड़ में बदल गया!

लेकिन इसे कीचड़ में बदलने वाली आवा के की कितने? अस-यास की ई दिख तो नहीं रहा!

कौन है मेरा मददगार?



मैं! तुम्हारा मित्र! इनविजिबल मैंन!

अदृश्य मानव यानी प्रोफेसर भीकांत वर्मा *

लेकिन तुम अचानक यहाँ मेरी मदद को कैसे आ पहुँचे, तुम तो जेल में थे?



जागराज और अदृश्य मूलव का प्रयास तेजी से रंग ला रहा था—

आवाज़! ऐसे हीलने रहो दोस्त, इनकी संख्या तेजी से घटती जा रही है।

सेमा नहीं होगा, क्योंकि मैं इस घटती संख्या को जितनी तेजी से छाहू बढ़ा सकती हूँ...

... और इसके लिए मुझे सिर्फ अपनी उंचालियों को थोड़ी सी तकलीफ देने की जरूरत है।

उधर कई स्विच दबें...

... और उधर—

ओह! ये क्या? दलदल से तो और बहुत से भयंकर प्राणी निकल कर बाहर आ रहे हैं!

ओह!



नागराज का अंत

अगर ये इसी तरह निकलते रहे तो इनहें स्वप्न काले की अवाह हम खुद ही स्वप्न हो जायेंगे।

हां, ऐसा ही होगा, लेकिन अवाह हम इनके निकलने के स्रोत को दूबकर उसे स्वप्न कर देंगे...



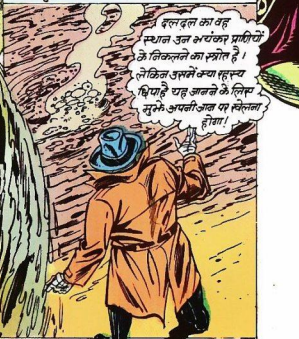
तुम्हारा सोचना एकदम ठीक है नागराज, इन प्राणियों के निकलने के स्रोत को बलबल में डूबने का प्रयास करता हूँ...

... तुम मेरी गत की सहायता से इनहें समाप्त करना जारी रखो।



गत की सहायता से नागराज उन प्राणियों को स्वप्न करने में जुट गया—

और अबुदुप मलब उर्फ प्रोफेसर श्रीकान्त वर्मा—



दलदल का वह स्थान उन अंधकर प्राणियों के निकलने का स्रोत है। लेकिन उसमें क्या रहस्य छिपा है यह जानने के लिए मुझे अपनी जान पर खेल्ना होगा!



अपने कपड़े मुझे उतारने होंगे! घर्ना के मेरे हाथ-पैर चलाने में बाधक हो सकते हैं!

दूसरे ही क्षण—

संक लंबी सांस लेकर कूदा प्रोफेसर श्रीकान्त वर्मा—

ईपकू!...



प्रोफेसर श्रीकान्त वर्माने अपने कपड़े उतारे —

दलदल में गहरे तक धंसता चला गया—

ओफ! दलदल के अंदर तो कुछ नजर नहीं आ रहा है। सिर्फ धुंकार ही महसूस किया जा सकता... और... मेरे हाथों से कुछ टकरा रहा है...

...सोटा पाइप लगला है! और... और... अरे! इसमें तो एक बक्कन लगा कम से कम पांच फुट चौड़ा।



बक्कन खोलकर पाइप के अंदर प्रवेश कर गया अतृप्त मानव और फिर दरवाजा अपने आप बंद हो गया—

वाह! दलदल के अंदर सोटा पाइप! और उसके अंदर सांस लेने योग्य हवा! यह जरूर किसी जीनियस वैज्ञानिक का काम है!

और वह जीनियस वैज्ञानिक ही नागराज का दुश्मन है!



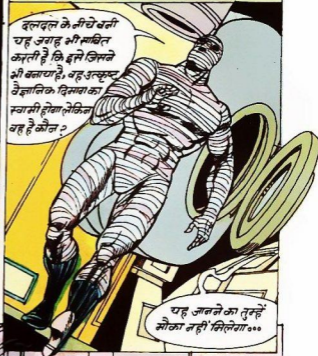
मिस किलर बुरी तरह चौकी-

ओह ! नागराज का वह मयदगार पावुप के रास्ते हेडक्वार्टर में प्रवेश करने की कोशिश कर रहा है। उसके स्वागत की तैयारी करनी होगी वह बचकर नहीं जाना चाहिए।



प्रोफेसर श्रीकान्त एक अलग ही दुनिया में जा पहुंचा था-

दुलदुल के नीचे बनी यह जगह भी साबित करती है कि इन्हे उसने भी बनाया है, वह उत्कृष्ट वैज्ञानिक दिग्गज का स्वामी होगा लेकिन वह है कौन ?



यह जानने का तुम्हें मौका नहीं मिलेगा...

क्योंकि उसने पहले स लाडा बनकर जमीन पर पड़े होगी।



ओह ! गलत है... यानी इन्हें मैंने आवासन की संवर्धन ही गर्ह है। अब इन्से बचने के लिए मुझे...

अवृद्ध होना पड़ेगा।

तेजी से अपने ड्रायर से पदियों उतारता चला गया प्रोफेसर श्रीकान्त -

और ही गया -

अवृद्ध!

अभी-अभी हमारे सामने खड़ा! अबनी देवते ही देवते अवृद्ध हो गया।



यह अवृद्ध है क्या और ?

ये सम्झने के लिए तुम्हें अपने दिग्बलों को कण्ट देने की जरूरत नहीं है।

धाड़



बैसला राग गानमैना-

वह उधर है भून डालो उसे!



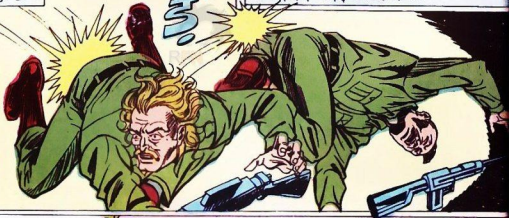
... लेकिन वह अवृद्ध मानव वहां कहां था-

वह तो यहां था-

धाड़

उस विदा में गोलियों की बरसात सी कर दी गानमैनों ने...

रडाक



गान सिर्फ सही तरफ से ही नहीं उल्टी तरफ से भी धाक सिद्ध होती है!

भाड़

इधर



मिस किलर ऑपरेट फाट्टे भौचककी अपने साधियों की होती दुर्गति को देख रही थी—

हेडक्वार्टर में धुसा शक्ति बड़े ही रहस्यमयी तरीके से अवृद्ध होकर मेरे साधियों पर टूट पड़ा। मेरी अनोखी शक्ति वाले को तो मिस किलर का गुलाम होना चाहिए।

एक ऊठके से अपनी चेयर से उठ खड़ी हुई मिसकिलर...

तुरंत ही मिसकिलर पहुंची उस बड़े हॉल में—

अपने आपको मेरे हवाले कर दो मिसटर इनविजिबल। तुम्हें की महाराजी मिस किलर के गुलाम बन कर तुम बहुत सुखी रहोगे।

मिस किलर, तुम जैसी अपराधी का गुलाम बनने से अच्छा है मर जाना।

... ते जो एक नजर सामने वाली स्क्रीन पर डाली तो उसके अंधों पर मुस्कान खिल गई—

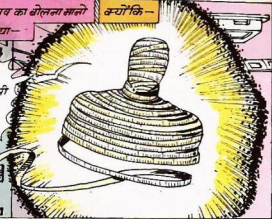
जी जान से जुटा हुआ है नागराज! लेकिन मुझे उम्मीद नहीं कि वह अपने प्रयास में सफल हो जायगा क्योंकि उसकी जरा सी थूक उसकी वरवाही का कारण बन जायगी।

लेकिन किलर हॉल मेरे लिए समस्या नागराज नहीं वह अवृद्ध मानव है जिसे मुझे अपने वडा में करना है।

अवृद्ध मानव का बोलना मानो राजब दा बाया—

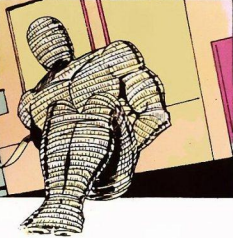
क्योंकि—

अरे! ये मुझसे टेप सी कैसे आ चिपकी?



कुछ समय पाने से पहले ही चिपचिपी रस्सी उसके स्वरेशरीर से लिपट गई—

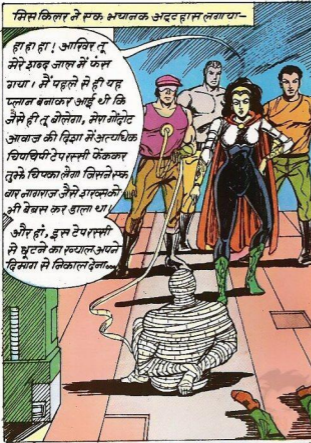
उफ!



मिस किलर ने एक भयानक अदृश हास लगाया-

हा हा हा! आगिर तु मेरे शब्द जाल में फंस गया। मैं पहले से ही यह प्लान बनाकर आई थी कि जैसे ही तु गोलगा, मेरा गोदोट आवाज की दिशा में अत्यधिक चिपचिपी टेप रस्सी फेंककर तुम्हें चिपका लेगा जिससे एक बार नागराज जैसे शरभको भी बेबस कर डाला था।

और हां, इस टेप रस्सी से घुटने का रब्याल अपने दिग्गवा से निकाल देना...



... क्योंकि जब तक रण्टी गम स्प्रे इस पर नहीं डलेगा तब तक तुम इससे किसी भी हाल में नहीं घूट सकते और उस स्प्रे की मदद से मैं तुम्हें तब तक इस टेप रस्सी से नहीं चुड़वाऊंगी जब तक तुम्हें अपना गुलास नहीं बना लेती।



लेकिन तुम्हारा माइंड बॉक्सा करने से पहले मैं तुम्हें उन सबलों का जवाब दे देना चाहती हूँ जिसकी तलाश में तुम अपनी जान पर खेलकर यहाँ तक आ पहुँचे...

... तुम यही सोच रहे थे कि लगभग वर्ष पहले के इस दलदल से जीवित होकर कैसे निकल रहे हैं इसका सारा जवाब यह है कि मैं वहाँ की मेहनत से एक ऐसी लाइफ सॉल्यूशन को बनाने में सफल हो गई थी जो किसी भी प्राणी के रक्त को एकत्रित कर



... उसे वैसा ही कृत्रिम रूप देता है जैसे उसका स्वरूप था। चूंकि लगभग वर्ष पुरानी इस दलदल में प्राचीन प्राणियों के कण काफी अधिक मात्रा में मौजूद हैं इसलिए लाइफ सॉल्यूशन कीचड़ में मौजूद अजीबो-गरीब रासायनिक प्रक्रियाओं से क्रिया करके उन प्राचीन प्राणियों को नया रूप दे रही है।



अपनी इस अद्भुत लाइफ सॉल्यूशन की बढौलत मैं सारी दुनिया पर राज करूँगी और तुम मेरे गुलास बन कर सुकें भरपूर सहयोग दो।

तुम्हारा सोचा शायद पूरा हो जाता मिस किलर...



... अगर तुम्हारी लाइफ सड़ाने से ज़िन्दा हुए प्राचीन प्राणी मुझे मार डालने में सफल हो जाते !

अपने जासूस सर्प नागानाथ की सहायता से जिसे मैंने चुपके से अवुद्य मनाव के पीछे इसलिए भेज दिया था कि अगर उस पर कोई सुनीवत आए तो वह मुझे तुरंत खबर करे...

... और अपने इस काम को नागानाथ ने बखूबी अंजाम दिया। जैसे ही अवुद्य मनाव संकट में फंसा नागानाथ यहाँ से निकलकर मेरे पास आ पहुँचे और मुझे बलबल में स्थित पाइप वाले शास्त्रों से लेकर यहाँ आ गया।



नागराज तुम !
त... तुम यहाँ कैसे आ पहुँचे ?



ओह ! मेरा ध्यान कुछ पलों के लिए कंट्रोल पैबल से हटा और तुम उसका फायदा उठाकर यहाँ आ पहुँचे !

लेकिन यहाँ तुम्हारी एक नहीं चलने वाली नागराज ! मैंने अपने चमत्कारी गोंदोट की वह फौज एक बार फिसलैयार कर ली है, जो एक बार तुम्हारी बेजह से खत्म हुई थी ! इस बार तुम उनसे नहीं बच पाओगे !

प्लान में ही गोंदोट की फौज ने नागराज को घेर लिया—



तेरी मौत के साथ-साथ मैं ना केवल नागराज की हत्यारी के नाम से नवाजी जाऊँगी बल्कि नागपादा के विद्याल तिलिस्मी खजाने की स्वामिनी भी बन जाऊँगी ! हा हा हा !

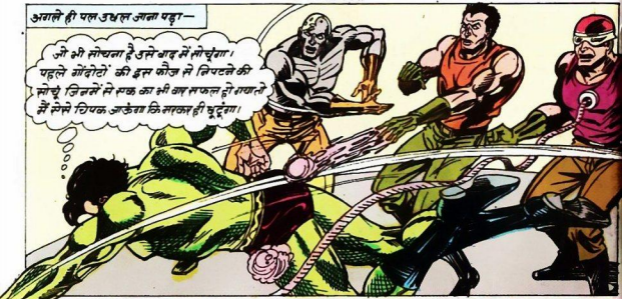


नागपादा ! कौन है ये नागपादा ?

सोच में डूबे नागराज को...

अगले ही पल उधल जना पड़ा—

जो भी सोचना है उसे बाद में सोचूंगा।
पहले गोंदोटों की इस फौज से निपटने की
सोचू जिनमें से एक का भी बुरा फल हो गया तो
मैं ऐसे थिपक अकेरा कि साकर ही घुटूंगा।



पिछली बार जीवी के स्टीमर स्प्रे
की बदौलत मैं इनसे बच गया था
लेकिन इस बार क्या करूँ इनके
सामने अपने सर्पसैबिकों को बाहर
निकालना तो बेवकूफी होगी क्योंकि ये
सभी उन्हें तुरन्त ही थिपका देंगे।

तो फिर क्या
करूँ? इनसे कैसे
निपटूँ ?

सोच ही लिया जगराज ने गोंदोटों से निपटने का तरीका—

इनकी गोंद शक्ति इन्हीं के
विरुद्ध इस्तेमाल करूँ तो बात
बन सकती है।
लेकिन इसके लिए मुझे
अत्यधिक फुर्ती...



... और उपलताकी
जगरत है ...

... और जगरत है सही समय
पर सही ढंग करने की।

सुपर गौंद की मदद से
एक दूसरे से चिपके ये दोनों
गौंदों के लो अर्थ जीवन भर
नहीं छूटने वाले !

इसलिये अब मुझे
अपना सारा ध्यान इस टेप
रफ़्सी फेंकने वाले इन दोनों
पर लगाना चाहिये !

घाई



इन दोनों की टेप रफ़्सी भी अवार इन्हीं
के डारिअर से लिपटे तो बात बने। लेकिन
इसके लिये मेरी तरफ बढ़ती टेप रफ़्सी
का उन की तरफ बढ़ना जरूरी
है और ये काम मेरा यह
उड़ने सर्प बरबूची अंजाम देगा।

नागराज के डारिअर से निकले उस उड़ने वाले सर्प ०००



००० ने टेप रफ़्सी को हवा में ही अपने
सुंह में दबोचा—

और—
शाबाश, मेरे
अंजाम
मिपाही !

पलभर में ही चिपचिपी टेप का बड़ा ढेर बने
जजर आस दोनों गौंदों के —



उसी क्षण नागराज को सतर्क किया
अदृश्य सनव की आवाज ने-

नागराज !
उधर देखो !

ओह ! इतने सारे गोंदोदस...
अगर ये यहाँ आ पहुँचे तो फिर
हमें कोई भी एक चिपचिपी मौत
मरने से नहीं बचा सकता !

उन्हें रोकना
होगा !

एक साथ सैकड़ों सर्पों को अपने हाथों में निकालता खता राधा नागराज-



अब-

वह मौका पाकर
यहाँ से भाग गई है !

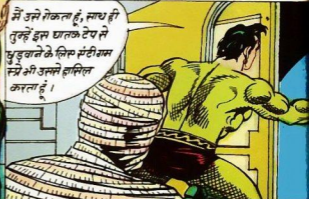
उसका यहां से भागकर जाना किसी
खतरे की तरफ इशारा कर रहा है, वह
जल्द कुछ ना कुछ भयानक
करने की ताल बेठी है !



मैं उसे रोकता हूँ, साथ ही
तुम्हें इस घातक टेप से
धुड़वाने के लिए सेंटीगम
स्त्रे भी उससे हारिल
करता हूँ !

उत्सीह है ये सर्प बरवाजा
गोंदोदस को इतनी देर
तो रोकने में सफल हो ही जायगा,
जितनी देर में सिस किलर का दिसबा
ठिकाने... अरे !

सिस किलर
कहाँ गई ?



नागराज का अंत

उड़न सिख मिल्खा सिंह की भांति भागता नागराज कंट्रोल रूम में पहुंचा—

मिस् किलर तो यहां कहीं नजर नहीं आ रही। कहां गई वह?



और मेरे साथ मौजूद है... तेरी मौत! तूने दलदल के रास्ते यहां पर आकर अपनी मौत का रास्ता खुद खुल लिया है...

... दलदल में से गुजरकर यहां पर आते समय, तेरे शरीर के कुछ कण भी दलदल में मिल गए थे...

... और उन कणों को समेटकर, मेरी अद्भुत 'लाइफ-मशीन' ने बना दी है तेरी मौत!

मैं यहीं मौजूद हूँ नागराज!



ओह! दलदल के कीचड़ से बना मेरा ही प्रतिकार!



धाड़!

नागराज ने पहला वार, रबुव करने का फैसला कर लिया था -

यह मेरा प्रतिरूप काफी खतरनाक लग रहा है! इससे पहले कि यह मुझ पर हमला करे, मैं इसको काबू में...
आह!

नागराज को ऐसा लगा, मानो उसने अपना पैर, चट्टान पर दे मारा हो -

और प्रतिरूप के वार ने उसके दिमाग का पुर्जा-पुर्जा हिला कर रख दिया -

आsssह!

हा हा हा ! यह तो मैं तुमको बताना भूल ही गई नागराज, कि इसका शरीर पत्थर सा सख्त है। और इसमें शक्तियां भी तुम्हारे जैसी ही हैं...
... फर्क सिर्फ इतना है कि तुम्हारे हाथ से असली सर्प निकलते हैं, और इसके हाथों से...

... कीचड़ के सांप! इनका मुझ पर क्या असर होगा, यह मुझे नहीं पता। मुझे इनसे बचना होगा।

नागराज ने, नागों का जवाब नागों से दिया, लेकिन—

ओह! मेरी सर्प सेना को इन कीचड़ के साँपों ने बेबस कर दिया है! अब तो सिर्फ एक ही रास्ता है...



... कि मैं इसको विष फुंकार से बेहोश कर दूँ!

लेकिन नागराज की विष-फुंकार ने प्रतिरूप को नुकसान पहुंचाने की बजाय...

नागराज का मस्तिष्क कुछ पलों के लिए भंडा-झून्ध हो गया, और उसकी गर्दन एक डिकेजे में कस गई—



... प्रतिरूप को उसकी एक और शक्ति याद दिला दी—

ओह! इसके मुँह से तो विष-फुंकार के स्थान पर कोई गैस निकल रही है। जो मुझ पर बेहोशी का सा असर कर रही है!



नागराज ने अपने मस्तिष्क पर धारी बे होड़ी को भटककर,
अपनी पूरी ताकत जुटाई और—

लेकिन प्रतिक्रिया न केवल फुर्ती से उठ खड़ा हुआ, बल्कि
उसने नागराज को एक घातक जकड़ में कैद कर लिया—



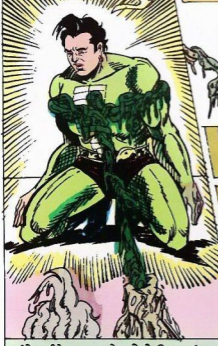
धड़! म

आह! इसका नाबापादा मेरे शरीर की
सारी शक्ति खींच रहा है!

मेरी ताकत खत्म... आहह!

और कक्ष मिस किलर के
ठहाके से गुंज उठा—

हा हा हा! खत्म
हुआ नागराज का
खेल हमेशा के लिए!
हा हा हा!



धीरे-धीरे नागराज के गले से निकलती आवाज
भी बंद हो गई, उसका शरीर झांल हो गया—

अब मिस किलर,
'नागराज किलर' बन
गई है!
अब नाबापादा का
खजाना भी मेरा होगा,
और अंडरवर्ल्ड का
साम्राज्य भी!
हा हा हा!





ऐसा है तो मेरी किक भी तुम ले लो, मिस किलर!

तडाक

आऊ! नागराज, तुम जिन्दा हो! पर ये हुआ कैसे? नागराज ने तुम्हारी शक्ति सोचनी बन्द कैसे कर दी?



नॉरी मिस किलर! मैं तुम्हें यह नहीं बता सकता क्योंकि मुझे श्रुत नहीं मालूम कि ऐसा कैसे हुआ?

किसी से कुछ पूछने की जरूरत नहीं है मिस किलर! ...

...अगर एक बार मेरी तरफ देख लोगी तो खुद-ब-खुद समझ आओगी!

धड़



अवृद्ध मानव, तुम लाइफ सडील पर! ओह प्रतिरूपको तुमने खिच दबाकर निष्क्रिय कर दिया।

लेकिन इस हाल में तुम यहां कैसे आ पहुंचे?

अपनी इच्छा शक्ति के बल पर, जो तब प्रचल हो उठी जब मेरे कानों में तुम्हारी दर्दनाक चीखें पड़ी-

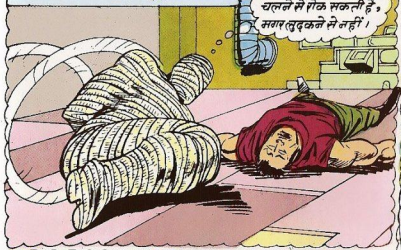
उफ़! नागराज की जान स्वल्प में है! ऐसे में मैं ही उसे बचा सकता हूँ... लेकिन मैं ऐसा करूँगा कैसे, मेरे शरीर पर तो टेपरस्सी बुरी तरह चिपकी हुई है!

मेरे लिए वह बहुत बड़ी समस्या थी-

... लेकिन मैंने उसका हल बूंद ही लिया -

यह टेप रस्सी मुझे चलने से रोक सकती है, मगर लुढ़कने से नहीं।

तेजी से लुढ़कता हुआ मैं कंट्रोल रूम में पहुंचा -



लेकिन अगर नागराज को बचाला है तो मुझे इस असंभव को संभव कर दिखाना होगा।

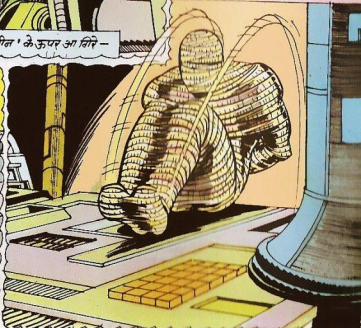
नागराज को उस प्रतिरूप ने बुरी तरह जकड़ रखा है, और मैं जानता हूं कि उसे कैसे बचाया जा सकता है उसके लिए मुझे उस लाइफ मशीन तक पहुंचना होगा इस हाल में अंधाई पर मौजूद उस मशीन तक पहुंचना लगभग असंभव है।



... लाइफ मशीन के ऊपर ला टिकाया -

सक कलाबाजी से मेरे मुड़े हुए पैर, 'लाइफ मशीन' के ऊपर आ गिरे -

पीठ के पीछे चिपके हुए हाथों का पुरजोर धक्का और मुड़े पैरों के त्विचाव ने मेरे शरीर को गोल घुमाकर ...



और यहां पहुंचने के बाद
ला गया मुडिकेल था उस स्थिति
दबा देना जो प्रतिरूप को
निष्क्रिय करता था।

तुमने अपने प्रयास से
नागराज को लो बचा लिया।
लेकिन तुम दोनों मुझसे बचोने
नहीं मैं तुम्हें रक्तम कारके
ही दम लूंगी।

... क्योंकि मैंने तेरी मशीन से
निर्मित प्रतिरूप को तेरे विरुद्ध
करने के लिए यह MODCHANGE
का स्थिति वन दिया है।



अब हमारी नहीं,
अपनी चिंता कर मिस
किलर...



इशारा



वसूरे ही पल- मिस किलर की चीरबे गुंजने लगीं-

उसके बेहोश होने के साथ ही ज्ञान्तु हुई-

मिस किलर के लिए इतनी ही
जा काफी है। अब इस प्राणी के साथ-साथ
घातक लाइफ मशीन भी नष्ट हो
जाती चाहिए।

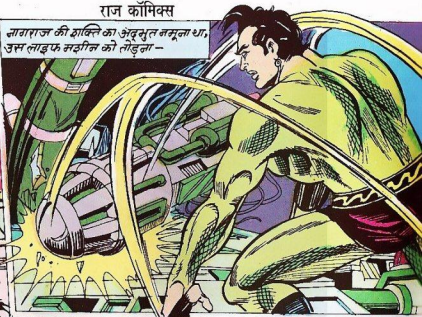
अंह!



नागराज की शक्ति का अनुभूत नमूना था,
उस लाइफ सटीन को तोड़ना -

ठीक कहते हो नागराज !
लेकिन ये डाढ़ काम तुम
अपने हाथों से ही पूरा
करो !

पर पहले
मुझे नीचे
उतार लो !



चलो, अब अपना
काम खत्म हुआ !

... तुम्हें इस सेंटी गम
स्प्रे की सहायता से टेपरस्सी
से आजाद करवाना !

अमी नहीं दोस्त, अमी
तो हमको मानवी और
उसके परिवार वालों को बंदू
कर उन्हें आजाद करना है और
फिर मिस किलर को उल
पहचाना है !

लेकिन पहले
इन सबसे जरूरी एक
काम...



टेपरस्सी धूटने के साथ ही अबूदयहो
गस प्रो केसल भी कांत -

फिर नागराज ने मानवी और उसके परिवार वालों को आजाद कराया-

मैं तुम्हारे इस सहयोग को
जीवन भर नहीं भूलूंगा दोस्त !

मुझे माफ करना नागराज,
मेरी बजह से तुम...

मुझे तुमसे कोई
शिकायत नहीं है मानवी,
तुम्हारी जगह मैं भी होता
तो वैसा ही करता।

आओ अब वापस
चलो, क्योंकि अमी
मेरी तलाश पूरी नहीं हुई
है और मेरी तलाश
तुम्हारी सहायता के बिना
पूरी हो भी नहीं सकती !

कोई बात नहीं नागराज !
मुझे तो तुम्हारी सहायता
करके खुशी ही हुई
है !

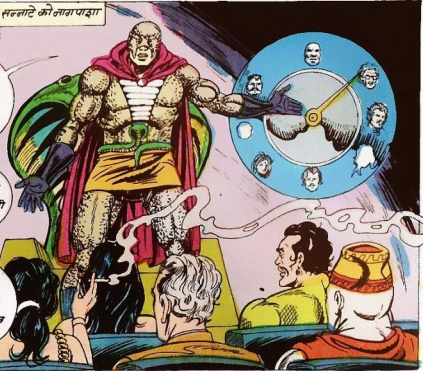
फिर सभी हंसी-खुशी वहां से खाना हुए-

दुधर किले के अन्दर धारस मरघट से सन्नाटे को नावापाड़ा की बंशीर आवाज ने अंग किया—

दोस्तो... पहले जादुगर झाकूरा और अब मिस किलर दोनों ही ना केवल नागराज को मारने में असफल रहे, बल्कि अपने-अपने वर्तमान जीवन को भी अंधकार में धकेल बैठे।

जहां जादुगर झाकूरा को उसके राह वाले बंदी बनाकर अपने साथ ले गए वहीं मिस किलर भारत की किसी अत्यन्त सुरक्षित जेल की शोभा बढ़ासगी।

और इन दो महारथियों की हार ने मेरे मनोबल को भारी ठेस पहुंचाने के साथ-साथ यह बात भी मेरे दिमाग में बिठा दी है कि नागराज को कोई भी नहीं समाप्त कर सकता!



सक ऋतुके से उठ खड़ा हुआ प्रोफेसर नागराज की शरणा—

इस बात को अपने दिमाग से निकाल दी जिस भीमान नावापाड़ा! मैं नागराज का निर्माता हूं। और मैं इसे चुटकियों में खत्म कर सकता हूं, आप मुझे मौका दीजिए!

फिर तो सभी खड़े हो गए—

नहीं, मैं करूंगा इस दुःख काम को!

अगर नावादंत ना कर सका इस छोटे से काम को तो भला दुनिया में कौन जानेगा नावादंत के नाम को!

मुझे मिलना चाहिए ये मौका!

नहीं मुझे!



हिन्दी फिल्म के किसी किले की अंतिम मुफ्फाकार बोला नावापाड़—

फिर वही पहले वाला विवाद... जिसका फैसला उसी तरीके से होगा...

... लक ंहील घुमाकर!

तेजी से घूम उठी लक ंहील की सुई—



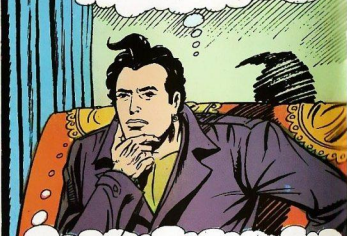
जिस तस्वीर के सामने रुकी वृद्ध था -



नागादत्त

नागाराज-

मैं नागासिणी द्वीप छोड़कर सदा के लिए आधुनिक दुनिया में रहने के लिए आ गया हूँ, लेकिन इस दुनिया में आकर मैं नागाराज के रूप में रहा तो मेरे वृद्ध मन अपराधी मुक्त पर हमला करने से बाज नहीं आयेगा।



और ऐसा होने पर मेरे इर्द-गिर्द रहने वाले लोगों पर कभी भी कोई भारी संकट आ सकता है। चूंकि मैं ऐसा नहीं चाहता इसलिए मुझे इस नागाराज के रूप को त्यागकर किसी अन्य रूप में इस दुनिया में रहना होगा।

और अपने उस रूप के लिए मुझे अपनी सौगांध तोड़कर इच्छाधारी शक्ति का सहारा लेना होगा।

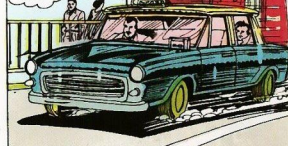
नागाराज!



नागाराज की सोचों को वहां पहुंची मानवी ने भंग किया-

मानवी से विदालेकर निकल पड़ा नागाराज-

यहां से जल्द से जल्द स्वजुराहो पहुंचने के लिए मुझे विमान पकड़ना है, और उसके लिए मुझे पहुंचना है बंबई के सहर इंटरनेशनल एयरपोर्ट।



तुम्हें अपने सपनों के मंदिर को खोजने के लिए मध्य प्रदेश में स्थित स्वजुराहो जाना होगा। नागाराज मेरा अध्ययन कहता है कि वहां मौजूद सैकड़ों प्राचीन मंदिरों में तुम्हें तुम्हारे सपनों का मंदिर जरूर मिलेगा।

ठीक है मानवी, मदद के लिए धन्यवाद। फिर कभी तुम्हारी जरूरत पड़ेगी तो मैं तुमसे जरूर मिलूंगा।



तभी एक अटक से रुक गई टैक्सी-

इसका कारण... ठीक टैक्सरी के सामने खड़ा नजर आया नागराज को —



ये कौन है, और इसने क्यों रोकी टैक्सरी?

आग बेटा, वरना आज के बाद टैक्सरी क्या अपने हाथ-पांव भी नहीं चला पाएगा।

नागराज अभी सोचता ही रह गया...

भयभयभय भयभयभय भयभयभय



... और सामने वाले ने वार भी कर दिया —

ये जानने के लिए इसके वारों से बचकर...

आह

धड़



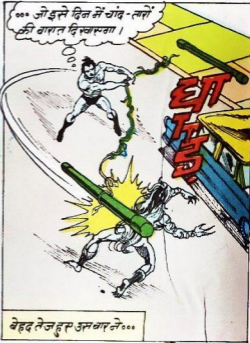
... और अपने वार कके इसे उस क्यों का जवाब देने के लिए मजबूर करना होगा!

ओह! एकदम से खतरनाक हो गया ये हुआहाहू! लेकिन क्यों?

धड़

बला की तेजी से मारसकाक
अच्छा वह—

ओह! मेरे वार से तो इसका पाया
और चढ़ गया। इसका दिमाग विकाले
लगाले के लिए, वह नीचे पड़ा लोहे
का खंभा एकदम ठीक रहेगा...



बेहद तेज हूँ उस वार से...

... हूहाहाह को जुदनी बना डाला, उसने टेक्सी अपने
दोनों हाथों में उठाली—

इसलिए इसने
पहले कि वह टेक्सी
मुझे पर चेंके...



ओह! यह भारी-भरकम
टैक्सी अगर मेरे ऊपर गिरी तो
मैं पिसकर रह जाऊंगा!



... मुझे उस पर हमला
कर देना चाहिए!

अब इतने संभलने का मौका देना बेवकूफी होगी।



... एक साथ ही अपना विष उसके शरीर में भर दिया—

नागराज के हाथ से धुट पड़े सर्पों ने...

अपना काम कर सभी सर्प वापस नागराज के जिन्ना में समा गए—

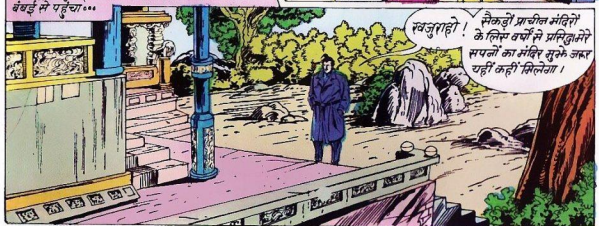
फिर नागराज दूसरी टैक्सी पकड़कर सयरपोर्ट पहुँचा—

ये झाड़ू मरने के लिए ही मेरे सामने आया था!



प्लेन द्वारा कुछ ही घंटों का सफर तय करके नागराज बंबई से पहुँचा...

स्वजुराहो! मैंकड़ों प्राचीन मंदिरों के लिए वर्षों से प्रसिद्धिमेरे सपनों का मंदिर मुझे जरूर यहीं कहीं मिलेगा।



उस मुरछ मंदिर की तरफ बढ़ते नागराज के कदम अचानक उस आवाज ने ठिठकाकर रख दिए—

ठहर जा, नागराज!



यहां कौन आ गया मुझे इस रूप में पहचानने वाला!

मैं नागफन! और ये जानकर तुझे सफल हैरानी होगी नागराज कि तुमको पहचानने वाला ये नागफन इस दुनिया से तेरी पहचान खत्म करके ही जाएगा!

ये तो इच्छाधारी नागमानव है, लेकिन इससे मेरी क्या दुश्मनी है, और इसको मेरे यहां होनेका पता कैसे ...



तडाक

अब तो नागराज को डरु होना ही था—

तेरे बारे में बहुत सेसवाल मेरे मस्तिष्क में घुमड़ रहे हैं नागफन, और मुझे उम्मीद है कि उनके जवाब बिना पिये नहीं देने वाला!

क्रोधित नागफन ने आश्चर्यजनक तरीके से एक भारी चट्टान को अपने फन से उठा लिया—

... चला! आहह!



नागराज, जरा सोच के बतलना कि ये भारी चट्टान तेरा कीसा बनाएगी या कचूसर निकालेगी!

भीषण प्रहार किया था नागफन ने—

नागराज के चार से उलट गया नागफन—

ओह! ये मुझ पर घट्टान केंकने आ रहा है!
नागराजसी पर भूलकर बचना होगा। और
उसके लिए निकालने होंगे नागा... अरे!

... अगार सोचता ही रह जाता तो फिर कुछ सोचने लायक ना रह गया होता—

उफ़! बाल-बाल बचा!
मुझे अपनी नागाशक्तियों
का फिर परीक्षण करके
देखना होगा।

कड़कड़कड़कड़

इस बार तो और भी राजब हो गया—

ये क्या? दसियों फुट लंबी नागा
राजसी निकलने की बजाय मेरे
झरिर से सिर्फ एक ही नागा निकला है।
उफ़! क्या हो रहा है ये?

सोच में
ढूबा हुआ
नागराज...

एक ही नागा
नहीं निकला...
नागाशक्ति बिल्कुल
खत्म!

उफ़! क्या हुआ... क्या
हुआ है... मेरी नागा
शक्तियों को? क्यों मेरे
झरिर से बाहर नहीं निकल
रहीं वो?

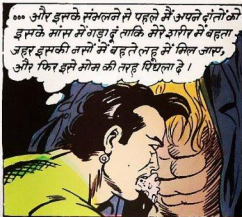
किसी और तरीके से इस नागाफन को बड़ा में
करना होगा! और वह काम करेगा मेरा यह
आवरकोट!

नागराज ने बिजली की सी फुर्ती से नागाफन के घातक फन
को, आवरकोट की लपेट में ले लिया—

फुटस

धड़क

अब है मेरी बारी एक प्रचण्ड वार करने की...



... और इसके संभलने से पहले मैं अपने दांतों को इसके मांस में गाढ़ा दूँ ताकि मेरे शरीर में बहता-जहर इसके नसों में बहते लहू में मिल जाए, और फिर इसे मोम की तरह पिघला दे।

नागराज के बिच को पचा जाए इस धरती के प्राणियों में ऐसी क्षमता कहाँ है—



मजबूरी में इसे मारना पड़ा, वरना ये मुझे मार डालता।

लेकिन ये था कौन और कहाँ से आया था?

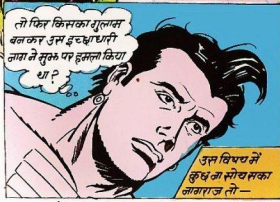
उन सवालियों का जवाब जो मुझा, नागराज की तो बुरी तरह चिंहुका वह—



पृथ्वी के घातक और अंधकार इच्छाधारियों को दूँदकर मेरे खिलाफ खड़ा करने की कला तो सिर्फ नागादंत ही जानता था, उसी ने एक बार मुझे पर ऐसी हमले कराए थे।

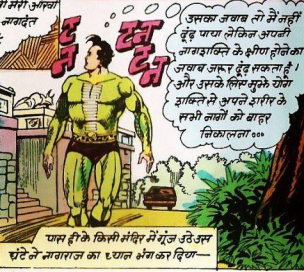
लेकिन नहीं, ये नागादंत नहीं हो सकता। नागादंत को तो मैं जर्मनी के ज्वालामुखी विस्फोट में फंसा छोड़कर आ गया था और वह ज्वालामुखी मेरी आँखों के सामने इस तरह फटा था कि नागादंत का बचना असंभव था। *

फिर सोचने लगा अपनी नाना डाकियों के बारे में—



तो फिर किसका गुलासा बन कर उस इच्छाधारी नागा ने मुझे पर हमला किया था?

उस विषय में कुछ जा सोच सका नागराज तो—



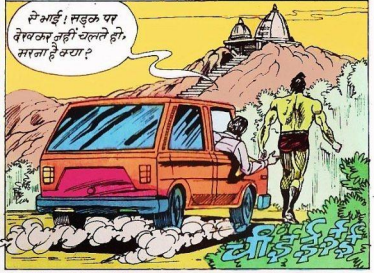
उसका जवाब तो मैं नहीं दूँद पाया लेकिन अपनी नागाडाकिलि के क्षीण होने का जवाब जरूर दूँद सकता हूँ। और उसके लिए मुझे योगा डाकिलि में अपने शरीर के सभी नसों को बाहर निकालना...

पास ही के किसी मंदिर में गूँज उठे उस घंटे ने नागराज का ध्यान अंग कर दिया—

* उपरोक्त के बारे में जानने के लिए अब इस पदिर ' फिर आया नागादंत '

अचानक मंदिर की तरफ बढ़ते नागराज ने अपना रास्ता बदल लिया—

से भाई! सड़क पर
वेरवकर नहीं चलते ही,
मरना है क्या?



एक झटके से नागराज पीछे धूम—

ओह... ये
क्या, इन आदमी की
आंखें!



बाकी के शब्द उसके गले में अटककर रह गए क्योंकि—



और जब तक वह संभलता, नागराज उसकी कार लेकर उड़नछू हो
चुका था—

वह हवा में लहरा गया था—

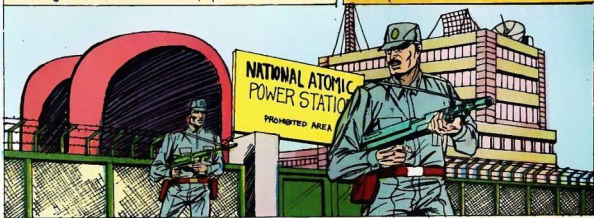


ओ, कोई
पकड़ो, वह मेरी
कार लेकर भागा
जा रहा है!

नागराज और कार चोर ?

संजुराहो से थालीस किलोमीटर दूर स्थित यह नेशनल एटॉमिक पॉवर स्टेशन है। यह अत्यन्त गोपनीय बात थी कि इस पॉवर स्टेशन में परमाणु बम का निर्माण किया जा रहा है—

यही कारण है कि यहां सौजद सुरक्षित सुरक्षक कर्मियों की निगरानी से बचकर कोई परिनदा भी पॉवर स्टेशन में पर नहीं मार सकता—



लेकिन ये क्या? आज कौन पहुंचा है यहां?

नगराज—

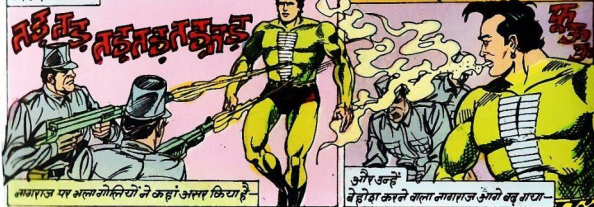
PROHIBITED AREA

हल्की सी विष-फुंकार से इन्हें बेहोश करना ही काफी है!



सक-दो सुरक्षक कर्मियों गोलियों चलाने में सफल हो ही गए, लेकिन—

फिर पल भर बाद ही गोलियां चलाने वाले बेहोशी के आंगन में कचबुडी खेलने लगे—



नगराज पर भला गोलियों ने कहां असर किया है—

और उन्हें बेहोश करने वाला नगराज आगे बढ़ गया—

लेकिन कंट्रोललैब में पहुंचा हर डाकस मानो जड़ होकर रह गया—

कंट्रोललैब की तरफ भागो, वहां मौजूद वैज्ञानिकों के साथ मिलकर हम उस बम को डिफ्यूज करने की कोशिश कर सकते हैं।

हा हा हा ! मैंने परमाणु बम से संबंधित कंट्रोल पैनेल को एकदम नष्ट कर दिया है अब बम को फटने और भारत में भीषण तबाही होने से कोई वही रोक सकता, और ऐसा होने में सिर्फ कुछ ही मिनट लगेंगे ! हा हा हा !



हटो मेरे रास्ते से, अब मेरा काम खत्म हुआ। जाने दो मुझे। हा हा हा !

ओह !

एक गार्ड ने नागराज पर कर दिया वह गार—

तूने लारवों की जान खतरे में डाल दी है, तू यहां से बचकर नहीं जा सकता !

ताड़

आह !



सिर पर लगी उस चोट से नागराज कराह उठा—

और फिर नागराज को संभलाने से पहले ही कई सुरक्षाकर्मियों ने उसे जकड़ लिया—

इसके मुंह पर काष्ठ करो ताकि ये हमें अपनी विष-फुंकार से बेहोशा ना कर सके।

अरे ! ये क्या कर रहे हो तुम ? क्यों पकड़ रहे हो तुमने मुझे ? क्या कुमूर है मेरा ?

मैं तो खजुराहो के मंदिरों के पास था फिर ये मैं कहाँ आ गया हूँ ? मैं यहाँ कैसे पहुंचा ? और मुझे ऐसा क्यों लग रहा है जैसे मैं अभी-अभी नींद से जागू हूँ !



नागराज को जब अपना कुसूर पता चला तो वह सन्न रह गया -

उफ़! नहीं! मैंने... मैंने यहाँ रूखे परमाणु बम को ऐसी स्थिति में ला दिया है कि वह कुछ ही देर बाद फटकर लारवों की जिन्टुगी को मौत के मुँह में धकेल दे! उफ़!

मैं ऐसा नहीं कर सकता!

तुमने ऐसा ही किया है नागराज! यहाँ मौजूद प्रत्येक डायनस यह जानता है!

ओह! उधार सेना है तो छोड़ो मुझे। मैं कोई ऐसा प्रबंध करने की कोशिश करता हूँ जिससे परमाणुबम को फटने से रोका जा सके!

तुम्हारी बातों में आकर तुम्हें छोड़ने जैसी बेवकूफी अब हम नहीं करेंगे नागराज, क्योंकि हम जानते हैं कि हमसे धटने के साथ ही तुम बम को फटने से रोकने का प्रयास करते वैज्ञानिकों पर हमला बोल दोगे!



ओह! इस तरह ये गार्ड मेरी बात मानने को राजी नहीं, अब तो मुझे अपने को छुड़ाने का दूसरा तरीका अपनाना पड़ेगा!

और वह बसरा तरीका है ये!

साफ करना दोस्तों, जो भारी भूल में कर चुका है, उसे सुधारने का मौका हमसिल करने के लिए...



... यह करना जरूरी हो गया है!



माडों के होश ठिकाने लवाने के बाद-



पलटता हुआ नागराज, एक भावते हुए वैज्ञानिक से टकरा गया-

क्या हुआ प्रोफेसर! आप सब लोग यूं भाव...
भाव...



भावो! तुम भी भावो, परमपु बम को फटने से रोकने के लिए हमने जो प्रयास करते थे वे सब करके देख लिस। अब कुछ नहीं हो सकता, बम हर हाल में फटेगा। दो मिनट बाद इन दो मिनटों में भागकर अपनी जान बचा सकते हो तो बचओ!

एक मिनट प्रोफेसर! कंट्रोल पैन्ल के सिवा क्या और कोई ऐसा साधन नहीं है जिससे परमपु बम को फटने से रोक जा सके!

मैं तुम्हें कुछ नहीं बताने लगा क्योंकि तुम ही होने वाली तबाही के जिम्मेवार हो!

इसका मतलब कोई दूसरा हल भी है...
दूसरा हल भी है...
दूसरा हल भी है...



...और वह क्या है ये तुम्हें मुझे बताया ही होगा प्रोफेसर!

सम्बन्धन में कैसे प्रोफेसर ने तुरन्त ही बोलना शुरू कर दिया-

परमाणु बम जहां रखा हुआ है ठीक उसके नीचे उसकी पाँवर बैटरी, कंट्रोल वायरों वगैरहा फिट हैं, जो एक अंडरग्राउंड रास्ते से जाकर हमने वहां फिट की हुई हैं। उस रास्ते से जाकर अगार कोई उस पाँवर बैटरी और कंट्रोल वायरों को काट दे तो बम को फटने से रोका जा सकता है ०००

००० लेकिन ऐसा होना इसलिए असंभव है क्योंकि एक तो इस समय तक वहां तक पहुंचने वाले अंडरग्राउंड रास्ते पर फटने की तैयार परमाणु बम से जनरेट हुई गर्मी का तापमान काफी अधिक ही गया होगा, जिसे आम आदमी नहीं सह सकता ०००



००० और ऊपर से सिर्फ दो मिनट में कोई भी इंसान परमाणु बम के नीचे फिट उस बैटरी व वायरों तक नहीं पहुंच सकता क्योंकि वे सभी बम के काफी अन्दरूनी हिस्से में लगी हुई हैं, वहां तक पहुंचने के लिए काफी सामान को खोलना पड़ेगा जो इतने कम समय में हराबिज नहीं हो सकता। फिर बताओ कोई मनुष्य वहां तक कैसे पहुंच सकता है।

अंजाम कुछ भी हो प्रोफेसर, मैं वहां तक पहुंचने की कोशिश जरूर करूंगा।

जल्द ही नागराज परमाणु बम के ठीक नीचे पहुंचने वाले अंडरग्राउंड रास्ते पर भागा जा रहा था -



अचानक भगवता - भगवता नागराज औंठे मुंह गिरा -

सचमुच यहां काफी गर्मी है। लेकिन मेरे शरीर पर नागों की विडोय खाल होने की वजह से मैं इसे कुछ समय तक जरूर सह सकता हूं, और वही कुछ समय मेरे लिए काफी होगा।



नागराज भौचक का रह गया—

मेरे शरीर से अपने-आप निकल कर ये नाग मेरे पैरों से लिपट गए और इन्होंने मुझे गिरा दिया...

... ओ! ये क्या? मेरे शरीर से तो बहुत से नाग बाहर निकल रहे हैं!



और... और ये क्या? ये तो मेरे शरीर से जकड़ते जा रहे हैं!

लेकिन ये नाग मरणात्मक मेरे शरीर से निकले कैसे मेरी नाग शक्तियां तो...



ओह नहीं... ये ये मेरी नाग शक्तियों में शामिल नाग हैं ही नहीं! इस जाति और इस किस्म के नागों से मेरे शरीर में तो कभी बसेरा नहीं किया...

... उफ! क्या चक्कर है ये? किसकी नाग शक्तियों मेरे शरीर में घुस कर रही हैं और... और ऐसे मौके पर निकलकर मुझे जकड़कर रोकने का प्रयत्न कर रही है जब लाखों जिनवृष्टियां और नागराज का मान-सम्मान बढ़ते रहे!

फिर हाल परमाणु बम के सिखा मेरे पास कुछ भी सोचने का समय नहीं है! इसलिए मुझे इन नाग-शक्तियों से तुरन्त ही स्वयं को आजाद करना है!



सक रुट के से नाग शक्तियों से आजाद हुआ नागराज तो...

... उसे एक और समस्या का सामना करना पड़ा—

ओह! मेरे मस्तिष्क पर फिर कोई हॉवी होने का प्रयत्न कर रहा है! लेकिन अब मुझे...



किसी भी हाल में ऐसा नहीं होने देना!
इस तरीके से मेरे सिर में घोट ली जरूर लगेगी, लेकिन अपने पर होंगी होती शक्ति से निषटने का एक, यही साधन है!

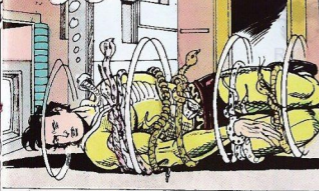
दीवार से सिर मारकर नागराज आगे बढ़ा तो उसे एक बार फिर नागराज ने जकड़ लिया -

उफ! फिर उन्हीं नागराज कियों ने मेरा रास्ता रोक लिया...
... जबकि बम फटने में सिर्फ कुछ ही सेकंड बाकी हैं!



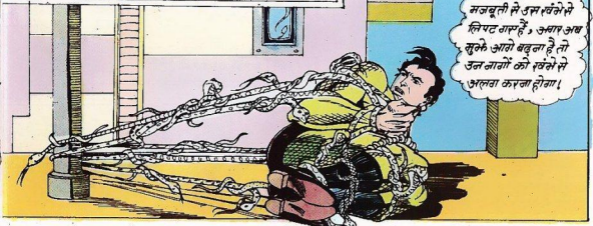
और इतने कम समय में मुझे सामने दिखते बम के ठीक नीचे पहुंचने के लिए यह रास्ता अपना होगा!

जमीन पर लोट लगाकर तेजी से लुढ़कने लगा नागराज -



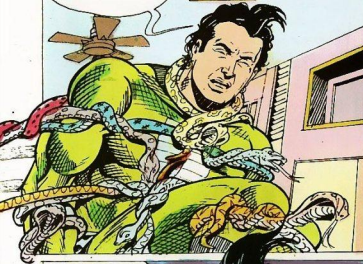
और फिर एक कदम का रास्ता रुक गया -

उफ! बेर सारे नाग मजबूती से उस खंभे से लिपट गए हैं, अगर अब मुझे आगे बढ़ना है तो उन नागों को खंभे से अलग करना होगा!

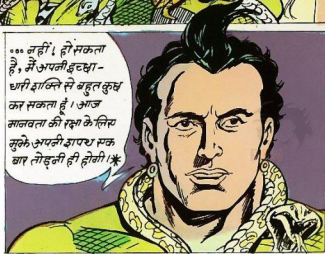


... अपनी पूरी शक्ति का इस्तेमाल करके !

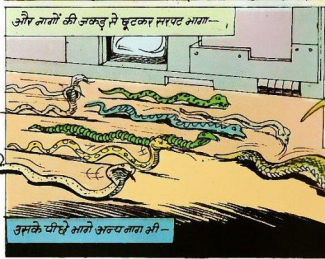
नागराज ने अपनी पूरी ताकत लगा दी -



... नहीं ! हो सकता है, मैं अपनी इच्छा-धारी शक्ति से बहुत कुछ कर सकता हूँ। आज मानवता की रक्षा के लिए मुझे अपनी शक्ति पर एक बार तोड़नी ही होगी ! *



और नागों की जकड़ से छूटकर सरपट भागा -



उसके पीछे भागे अन्य नाग भी -

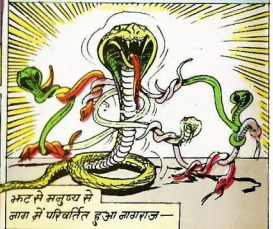
लेकिन वह अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाया -

उफ़ ! नागशक्तियों की पकड़ काफी मजबूत है, मैं इनसे नहीं छूट पा रहा हूँ... और जैसे भी अंधार में किसी तरह छूट आया तो भी क्या होगा, मैं उस छोटे से रास्ते से घुसकर बस की मशीनरी तक तो पहुँच नहीं पाऊँगा।

अब कुछ नहीं हो सकता, बस के फटने में कुछ ही सेकण्ड बाकी हैं और मैं बिल्कुल असहाय हूँ... अब संयम कुछ नहीं हो...



अब अला अपनी इच्छाधारी शक्ति का इस्तेमाल करने में नागराज समर्थ क्यों होगा -



भट से मनुष्य से नाग में परिवर्तित हुआ नागराज -

हिंस्र

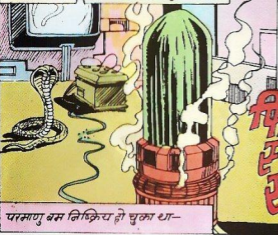
* नागराज के इच्छाधारी रूप और सौगन्ध के विषय में जानने के लिए पढ़ें - 'इच्छाधारी नागराज और बकोरा का जादू'

लेकिन नागराज अब हाथ आने वालों में से कहां था—



वह तो तेजी से सामने दौड़ते संकरे रास्ते में प्रवेश कर गया—

लेकिन अब— अब बचत रास्ता चुका था—

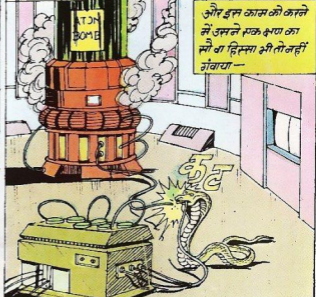


परमाणु बम निष्क्रिय हो चुका था—

और इस कारनामों की अंजाम देने वाला था नागराज, जो नागरूप में संकरे रास्ते से बाहर निकल ०००



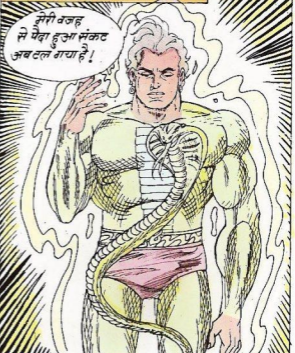
बम की मशीनरी में प्रवेश करने के साथ ही अब नागराज को पहला काम करना था पॉवर बैटरी और कंट्रोल वायरों को काटने का—



और इस काम को करने में उसने एक भ्रम का मौ वा हिस्सा भी तो नहीं गांवाया—

क्योंकि वह अच्छी तरह जानता था कि समय गांचले का एक ही मतलब था उसकी और लारवों मनुष्यों की मौत—

०० अपने असली रूप में वापस आ गया—





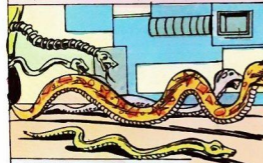
इसलिए अब समय है यह देखने का कि मेरी नागाशक्तियों में मेरे बुलावे पर क्यों नहीं आई? कौन है जो मेरे मस्तिष्क को अपने वडा में कर लेता है, और किसकी हैं वे नागाशक्तियाँ जो मेरे शरीर में घास कर रही हैं?...



... ये सब ज्ञानने के लिए मुझे अपनी योग क्रिया का सहारा लेना होगा!

नागराज योग मुद्रा में बैठ गया—

उन्होंने के साथ निकला वह अनोखा नागा भी—



जो तेजी से एक तरफ सरक गया—

उसके शरीर से निकलने लगीं सभी नागाशक्तियाँ —

नागराज ने अपनी आंखें खोलीं तो वह हैरान रह गया—



ओह! ये सब तो मेरी ही नागाशक्तियाँ हैं! तो वे नागाशक्तियाँ कहाँ गईं जो मेरे शरीर से निकलकर मेरे ही विरुद्ध हो गईं थीं!



... मैं जो तुम्हारे शरीर से बाहर निकल लो वे भी मेरे साथ ही निकल गईं!

नागदंत! त... तुम!

वे शक्तियाँ मेरी थीं, नागराज!

हां, नागराज मैं! मैं ही तुम्हारी उन नागाशक्तियों के साथ नागरूप में तुम्हारे शरीर में उस समय समा गया था, जब वे मेरे भेजे गए हुहाहाह को मारकर तुम्हारे शरीर में समाई थीं!

और जब मैं तुम्हारे शरीर में समा ही गया था, तो फिर मेरे लिए तुम्हारी नागशक्तियों और तुम्हारे मस्तिष्क पर कब्जा करना कौन सी बड़ी बात थी !

और फिर मुझे प्राप्त होगा लिफ्टमैरी खजाना और नागराज के हत्यारे का खिताब !

एक बात और तुम्हारे दिमाग में खेलबली मचा रही होगी नागराज, और वो ये कि मैं जर्मनी के ज्वलनामुरची से बचकर कैसे निकल आया ?

इसका सीधा सा जवाब यह है कि जिस समय ज्वलनामुरची फटा उस समय मैं ज्वलनामुरची में था ही नहीं। मैं तो उससे कहीं पहले ही नागराज धारण कर ...



और इसके पीछे मेरा उद्देश्य यह था कि मैं तुम्हें पूरे विश्व में इतना खूनाम करवा दूँगा या हूँगा था कि तुम स्वयं ही आत्महत्या करने के लिए मजबूर हो जाते !



क्रोध से फुंकार उठा नागराज —



अच्छा हुआ तूने सभी सवालों का जवाब दे दिया नागादत्त, वरना मुझे ये मलाल जीवनभर रहता कि तेरे साथ ही मेरे सभी सवाल खत्म हो गए।

... जर्मनी में लंजी से बिल बनाना हुआ वहाँ से बहुत दूर निकल गया था—

और नागशक्तियों के बिना तू नागादत्त के सामने झुकवुन सकता है। जिसकी वार्डन नागादत्त अब चाहे मरोड़ सकता है !

वार करने की आगे बढ़ा नागराज ...

... लेकिन वार करने में सफल हुआ नागादत्त—

हाहाहा ! तू मुझे मारेगा नागराज, जबकि अब तेरा मेरा कोई मुकाबला नहीं है, तेरी सभी नागशक्तियों मेरे वश में यहाँ पहुँची हैं !

धाड़!



इस विष फुंकार का कमाल किसी लेंगे-गैरे नल्डून्वैरे को जाकर दिखा नागराज ! नागादंत के सामने अब तेरी एक नहीं चल सकती !

नागादंत के सामने वौन सा साबित हो रहा नागराज ०००



००० ज्यादा देर नहीं टिक पाया—

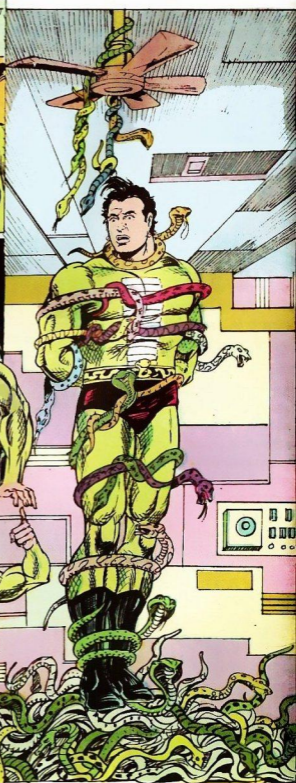
नागादंत का अगला धार तेरी जिंदगी सम्भल कर सकता है नागराज ! लेकिन नहीं, एक झटके में तुम्हें मौत देकर मैं तेरी मौत को आपस नहीं बनाना चाहता मैंने तो तेरे लिए ऐसी मौत सोच रखी है जिसमें तू तिल-तिल करके खरगा !



ध्यान से देख नागराज, आज जो तुम्हें मौत देने आ रही है वो तेरी ही नागाशक्ति याँ है। तेरे ही दारीर में वास करने वाले नागा फांसी के फंदे के रूप में तेरे गले में पड़े हैं और उन्हीं के धर पर तू खड़ा हुआ है, और उन्हीं-उन्हीं एक-एक करके ये धर के रूप में तेरे पैरों के नीचे मौजूद नागा वहां से साकते रहेंगे त्यों-त्यों मौत तेरे लजदीक आती चली जायगी !

और नागों के धर के पूरी तरह हटने के साथ ही फांसी के फंदे से लटककर ही जायगा ०००

नागराज का अंत ! हो ही हो !



तुम को नागराज का रूप मैंने यानी प्रोफेसर नागमणि ने दिया है नागराज... और अगर मैं तुमको बनाने का तरीका जानता हूँ, तो तुमको खत्म करने का रास्ता भी जानता हूँ।

तुझे मारने के लिए चार तरह के जहरों का तेरे खून में मिलना जरूरी है। मेरे पैदा किए हुए दो जहरीले प्राणी तो तुझे काटकर गल गए। तीसरा तुझे काट रहा है। अब जब चौथा जहर तेरे खून में मिलेगा तो साथ ही साथ, तेरी आत्मा भी परमात्मा से मिल जाएगी।

नागमणि सच कह रहा है। इन तीन जहरों के मिश्रण से मेरे शरीर को लकवा सा मार गया है। ...पर वह चौथे जहरीले प्राणी कौन है और कहां है?

...वह चौथा प्राणी जब नागराज के सामने आएगा तो नागराज के साथ, आप सबकी आंखें भी फटी रह जाएंगी।

नागराज का एक जहरबुझा विशेषांक जो खोलेगा कई रहस्यों की परतें—

जहर